M.F.A - 2nd Semester

PHILOSOPHY OF ART (Western & Indian)

Code - T-2001

UNIT - III

सौंदर्यशास्त्र का वर्तमान स्वरूप भारत में यूरोप के अनुकरण पर विकसित हुआ है। यूरोप में इसे "एस्थेटिक्स" कहा जाता है।

हीगेल ने इसे ललित कलाओं का दर्शन माना। सामान्य रूप में आज इसका सम्बन्ध उस सौंदर्य से माना जाता है जो कला अथवा प्रकृति में है।

आरम्भ में सौंदर्यशास्त्र दर्शनशास्त्र का ही एक अंग था।

यूनानी-रोमन सौंदर्य-दर्शन :-

यूरोप की सभ्यता, कला, संस्कृति ज्ञान और विज्ञान की परम्पराएँ प्राचीन यूनान से आरम्भ हुई थी। आज भी जब किसी यूरोपीय विचारधारा का इतिहास समझने का प्रयत्न किया जाता है तो उसे प्राचीन यूनान से ही आरम्भ करते हैं। प्राचीन यूनान में अनेक प्रसिद्ध दार्शनिक, विचारक, कलाकार तथा कवि ~~हो गये हैं किन्तु~~ हुए हैं किन्तु उन सब में प्लेटो तथा अरस्तु के नाम कला तथा सौंदर्य से सम्बन्धित विचारों की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं।

यूनानियों के लिए सौन्दर्य यथार्थ था, तथ्य था, कल्पना नहीं, 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की ~~अवधार~~ अवधारणा पश्चिम में यूनानियों की देन है। यूनानी विचार का मूल मंत्र था कि 'जो तथ्य है, वह सुन्दर है' और जो भी सुन्दर है, वह अवश्य ही शिव या कल्याणकर है' यह अवधारणा

Scanned with CamScanner

यूनानी विचार की उच्चता और गहनता दोनों प्रकट करती है।

प्लेटो से पूर्व यूनान में कला के सौंदर्य का विचार सत्य, अनुकृति और शुद्धीकरण की दृष्टि से आरम्भ हो चुका था। प्राचीन यूनान में अनुकृति का सिद्धान्त भी प्रचलित हो चुका था। सुकरात नामक दार्शनिक (४६९-३९९ ई०पू०) ने कहा था कि अनुकृति का अर्थ अच्छी बातों की अनुकृति है। सुकरात ने अनुकृति के सिद्धान्त का उल्लेख चित्रकला और मूर्तिकला के प्रसंग में किया है। वे केवल भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली अनुकृति को अच्छा न मानकर उसमें सौंदर्य का सम्मिश्रण आवश्यक मानते थे क्योंकि कलाकार अनेक वस्तुओं के सुन्दर अंशों का चयन करके इनके आधार पर ही किसी सुन्दर कृति की रचना करता है वस्तुओं के बाहरी रूपों के अतिरिक्त सुख-दुःख आदि जो मानसिक दशाएं है, कलाओं में उनकी भी अनुकृति करनी चाहिए। गोरजियास नामक दार्शनिक ने भी यही कहा था कि अनुकृति का अर्थ मूल वस्तु के समान प्रतिकृति (नकल) बनाना नहीं है। गोरजियास ने सर्वांगीण अनुकरण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया था। किन्तु सुकरात ने उसके स्थान पर वरेण्य (अच्छे और स्वीकार्य) अनुकरण को महत्व दिया।

कला का प्राचीनतम सिद्धान्त अनुकरण का सिद्धान्त है जिसे सुकरात ने दिया और बाद में प्लैटो और उनके शिष्यों ने पूर्ण रूप तक पहुंचाया। वास्तव में प्लैटो सुकरात के शिष्य

थे और उन्ही के सिद्धान्तों को आगे बढ़ा रहे थे।

शुद्धीकरण का सिद्धान्त भी पाथागोरस के अनुयायियों में प्रचलित था जो संगीत और गणित के अनुशीलन से आत्मा का शुद्धीकरण मानते थे। सुकरात ने भी सौंदर्य को कल्याणकारी माना था। इन्ही बिखरे हुए विचारों के आधार पर आगे चलकर प्लेटो तथा अरस्तु के सिद्धान्त विकसित हुए।

Scanned with CamScanner